लेखापरीक्षा ज्ञानोदय

हिंदी त्रैमासिक ई-पत्रिका

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

छठा संस्करण

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई
सी-25, ऑडिट भवन, 8वाँ तल, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स बांद्रा)पूर्व(, मुंबई -400 051
फैक्स-02226573814 ई-मेल pdcamumbai@cag.gov.in

लेखापरीक्षा ज्ञानोदय परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री सी एम साने
महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा

संरक्षक

श्री अविनाश जाधव - उपनिदेशक

संपादक- मंडल

श्रीमती स्वप्ना फुलपाडिया	**वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी**
श्रीमती मीना देशप्रभु	**वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी**
श्रीमती विद्या मुरलीधरन	**वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी**
श्रीमती कल्पना असगेकर	**पर्यवेक्षक**
श्री आनंद कुमार सिंह	**कनिष्ठ अनुवादक**

(रचनाओं की मौलिकता का पूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकारों का है - संपादक-मंडल)

अनुक्रमणिका

संदेश	श्री सी एम साने, महानिदेशक
संदेश	श्री अविनाश जाधव, उपनिदेशक
संदेश	श्री अनुपम जाखड़, उपनिदेशक
संपादकीय	श्री आनंद कुमार सिंह
मेरा अनुभव	श्रीमती स्वप्ना फुलपाडिया
धरती के मानव	सुश्री वी. सरला
मेरी मैया	
मेरे दोस्त	श्री इमरान खाटीक
ट्रेड वॉर' एवं 'डब्ल्यू. टी. ओ.	श्री आकाश सिंह हाडा
मनोरंजन का स्वरुप	श्री आनंद कुमार सिंह
नारी एक शक्ति	श्री संजय एल. ठाकुर
सोशल मीडिया का समाज पर नकारात्मक प्रभाव	सुश्री पूजा साव
मंगलग्रह मंदिर	श्री शरद धनगर
भारतीय संस्कृति	श्री हरीश कुमार
राजभाषा संबंधी जानकारी	
सरकार के कार्मिकों के लिए राजभाषा हिंदी से संबंधित प्रोत्साहन योजनाएं	
आपके पत्र	
राजभाषा हिंदी के संबंध में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित लक्ष्य	

संदेश

यह अत्यंत आनंद का विषय है कि कार्यालय द्वारा तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के छठवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका प्रकाशन से कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रति रुचि जागृत होती है तथा वे राजभाषा के प्रयोग हेतु आकर्षित होते हैं। आशा है कि पत्रिका राजभाषा हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हुए अपनी सार्थकता को सिद्ध करेगी।

हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है। इसका लचीलापन इसे जनमानस से जोड़ता है। अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों को ग्रहण करते हुए हिंदी का प्रयोग सरल एवं सहज होता जा रहा है। राजभाषा हिंदी के विकास को ध्यान में रखते हुए राजभाषा संबंधी नीतियों का अनुपालन किया जाना चाहिए। सहज हिंदी के प्रयोग से अधिकारी एवं कर्मचारी इसके प्रयोग के लिए आकर्षित होते हैं। हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए यथासंभव सूचना प्रौद्योगिकी के साधनों का प्रयोग सुनिश्चित करना चाहिए। हमें एक साथ मिलकर हिंदी के विकास हेतु प्रयास करना चाहिए।

पत्रिका के छठवें अंक के प्रकाशन को सफल बनाने में सहयोग करने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का धन्यवाद। प्राप्त रचनाओं के सुंदर प्रस्तुतीकरण हेतु संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

आशा करता हूँ कि हम सभी एक साथ मिलकर राजभाषा के विकास हेतु सदैव प्रयत्नशील रहेंगे तथा एक दूसरे का सहयोग करते रहेंगे।

(सी एम साने)

महानिदेशक

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

संदेश

यह अत्यंत गौरव का विषय है कि कार्यालय राजभाषा हिंदी के विकास में सहयोग करते हुए त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के छठवें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। पत्रिकाओं के प्रकाशन से हिंदी अत्यंत रुचिकर माध्यम से अधिकारियों एवं कर्मचारियों तक पहुंचती है जिसके फलस्वरुप वे हिंदी से स्वयं को जोड़ने का प्रयास करते हैं।

कार्यालय में सरल एवं सहज हिंदी का प्रयोग किया जाना चाहिए जिससे अधिकारी एवं कर्मचारी हिंदी के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित हो सकें। राजभाषा विभाग के 12 प्र (प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, प्राइज(पुरस्कार), प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास) की रणनीति का प्रयोग करके कार्मिकों को प्रोत्साहित करना चाहिए। हिंदी में अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करने से इसके प्रयोग के क्षेत्र में वृद्धि होगी। आवश्कतानुसार इलेक्ट्रॉनिक साधनों का प्रयोग करके राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाया जा सकता है। इलेक्ट्रॉनिक साधनों की सहायता से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सरल बनाया गया है।

कार्यालयों द्वारा राजभाषा हिंदी को उचित रुप से विकसित करने के लिए पत्रिकाओं के प्रकाशन के साथ-साथ समयानुसार विभिन्न आयोजन किया जाना चाहिए। एक साथ मिलकर संयुक्त प्रयास करते हुए राजभाषा हिंदी के विकास के लिए किए गए कार्यों से उचित परिणाम प्राप्त होंगे और राजभाषा को उचित स्थान प्रदान करने में सहयोग करेंगे।

पत्रिका के छठवें अंक में सहयोग करने वाले समस्त रचनाकारों को धन्यवाद तथा संपादकीय मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

मैं यह आशा करता हूँ कि पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" का छठवाँ अंक आप सभी के लिए रुचिकर एवं ज्ञानप्रद होगा तथा राजभाषा हिंदी के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करेगा।

(अविनाश जाधव)

उपनिदेशक

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

संदेश

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि कार्यालय द्वारा हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के छठवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका प्रकाशन कार्यालय का राजभाषा के विकास के प्रति उत्साह प्रदर्शित करता है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में पत्रिकाओं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

कार्यालय के इस कार्य की सराहना करते हुए हिंदी के प्रोत्साहन के लिए लगातार ऐसे प्रयास चलते रहें, ऐसी कामना करता हूँ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादकीय मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(अनुपम जाखड़)

उपनिदेशक

कार्यालय निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, देहरादून

संपादकीय

कार्यालय की त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका “लेखापरीक्षा ज्ञानोदय” के छठवें अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहयोग के रुप में सादर समर्पित है। रचनाकारों द्वारा रचनाओं के माध्यम से अपनी रचना-कौशल को प्रदर्शित किया गया है। विभिन्न विषयों पर आधारित रचनाओं की विषय-वस्तु को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत करने का यथासंभव प्रयास किया गया है।

सरकारी कार्यालयों द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढाने हेतु यथासंभव प्रयास जारी है। कार्यालयों द्वारा राजभाषा अधिनियम तथा राजभाषा नियम के अनुपालन को सुनिश्चित किया जाता है। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा के प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करने संबंधी नियम की जानकारी शामिल की जाती है जिससे अधिक से अधिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों तक जानकरी पहुंच सके। राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए कई प्रोत्साहन योजनाएं लागू की गई हैं। पत्रिका इन योजनाओं से कार्मिकों को अवगत कराती है। रुचिकर रचनाओं के साथ-साथ ज्ञानप्रद जानकारी पहुंचाने के लिए पत्रिका एक सशक्त माध्यम है।

सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति हार्दिक आभार जिनसे प्राप्त रचनाओं एवं सहयोग के परिणामस्वरुप पत्रिका का सफल प्रकाशन संभव हो पाया है। हमें पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी आप सभी का सहयोग मिलता रहेगा।

आप सभी पाठकों से आग्रह है कि पत्रिका के संबंध में अपने अमूल्य विचार प्रेषित करें जिससे हमारे उत्साह में वृद्धि हो तथा हम एक साथ मिलकर राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अपना योगदान देते रहें और राजभाषा अपने उचित स्थान पर विद्यमान हो सके।

आनंद कुमार सिंह

कनिष्ठ अनुवादक

श्रीमती स्वप्ना फुलपाड़िया

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

मेरा अनुभव

जैसे जैसे मेरी उम्र में वृद्धि होती गई, मुझे समझ आती गई कि अगर.....

मैं रु 300 की घड़ी पहनूं या रु. 30000 की, दोनों समय एक जैसा ही बताएंगी।

मेरे पास रु. 300 का बैग हो या रु. 30000 का, इसके अंदर के सामान में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

मैं 300 गज के मकान में रहूं या 3000 गज के मकान में, तन्हाई का एहसास एक जैसा ही होगा।

आख़िर में मुझे यह भी पता चला कि यदि मैं बिजनेस क्लास में यात्रा करूं या इकॉनमी क्लास में, अपनी मंजिल पर उसी नियत समय पर ही पहुँचूँगा।

इसलिए, अपने बच्चों को बहुत ज्यादा अमीर होने के लिए प्रोत्साहित मत करो बल्कि उन्हें यह सिखाओ कि वे खुश कैसे रह सकते हैं और जब बड़े हों, तो चीजों के महत्व को देखें, उसकी कीमत को नहीं।

फ्रांस के एक वाणिज्य मंत्री का कहना था -

ब्रांडेड चीजें व्यापारिक दुनिया का सबसे बड़ा झूठ होती हैं, जिनका असल उद्देश्य तो अमीरों की जेब से पैसा निकालना होता है, लेकिन गरीब और मध्यम वर्ग इससे बहुत ज्यादा प्रभावित होते हैं।

क्या यह आवश्यक है कि मैं आईफोन लेकर चलूं फिरू, ताकि लोग मुझे बुद्धिमान और समझदार मानें??

क्या यह आवश्यक है कि मैं रोजाना मैक डी या केएफसी में खाऊँ ताकि लोग यह न समझें कि मैं कंजूस हूँ??

क्या यह आवश्यक है कि मैं प्रतिदिन मित्रों के साथ उठक-बैठक डॉउनटाइम कैफे पर जाकर लगाया करूँ, ताकि लोग यह समझें कि मैं एक रईस परिवार से हूँ??

क्या यह आवश्यक है कि मैं गुची, लाकोस्ते, एडिडास या नाइक की वस्तुवें ही पहनूं ताकि ऊँची हैसियत वाला कहलाया जाऊँ??

क्या यह आवश्यक है कि मैं अपनी हर बात में दो चार अंग्रेजी शब्द शामिल करूँ ताकि सभ्य कहलाऊं??

क्या यह आवश्यक है कि मैं एडेल या रिहाना को सुनूँ ताकि साबित कर सकूँ कि मैं विकसित हो चुका हूँ??

नहीं दोस्तों !!!

मेरे कपड़े तो आम दुकानों से खरीदे हुए होते हैं।

मित्रों के साथ किसी ढाबे पर भी बैठ जाता हूँ।

भूख लगे तो किसी ठेले से ले कर खाने में भी कोई अपमान नहीं समझता।

अपनी सीधी सादी भाषा में बोलता हूँ।

चाहूँ तो वह सब कर सकता हूँ जो ऊपर लिखा है।

लेकिन,

मैंने ऐसे लोग भी देखे हैं जो एक ब्रांडेड जूतों की जोड़ी की कीमत में पूरे सप्ताह भर का राशन ले सकते हैं।

मैंने ऐसे परिवार भी देखे हैं जो मेरे एक मैक डी के बर्गर की कीमत में सारे घर का खाना बना सकते हैं।

मानव मूल की असली कीमत उसकी नैतिकता, व्यवहार, मेलजोल का तरीका, सहानुभूति और भाईचारा है, ना कि उसकी मौजूदा शक्ल और सूरत।

आपकी सोच में ताकत और चमक होनी चाहिए। छोटा-बड़ा होने से फर्क नहीं पड़ता, सोच बड़ी होनी चाहिए।

मन के भीतर एक दीप जलाएं और सदा मुस्कुराते रहें।

****

सुश्री व्ही. सरला

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

धरती के मानव

धरती के सुपुत चल पडे चांद पर, मंगल पर और कई ग्रहों पर
करने खोज नये नये विज्ञानो का और करने कई परीक्षण वहाँ पर
जो होगा फलदाई मानव जीव के लिए, करने पर अमल उस परीक्षण के परिणाम पर

कोई जा रहा है भारत से, कोई अमेरिका से, कोई रुस और चीन से वहाँ पर
नहीं कोई सरहद वहाँ पर न किसी प्रकार का विभाजनो का रोक-टोक वहाँ पर

है सभी का एक ही मकसद करके परीक्षण वहाँ पर
बनाये कैसे मानव जीवन को कुशल और सुखदाई इस धरती पर

तो क्यों नही अपना पाते भाईचारा के नियमो को यहाँ धरती पर
क्यों है भेद-भाव और सरहद की बेड़ियां बांधे मानव को इस धरती पर
जहाँ है उनको करना गुजारा उम्र भर इस धरती पर

मिटाकर सभी भेद-भाव और तोड़ कर सरहद की बेड़ियां इस धरती पर
होगा सही मायनो में सुखी और खुशहाल जीवन मानव का इस धरती पर

****

सुश्री व्ही. सरला

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

मेरी मैया

मैं हूँ नटखट कन्हैया
और यह है मेरी यशोदा मैया

देख के मुझको ढले उनका दिन और रैना
है गर्व इन पर मुझे इतना कि कर सकूं शब्दों में बयान कभी ना

सिखाया है मुझे थाम के मेरी ऊँगली चलना
है मुझे अब उनके दिखाए राह पे जाना

मेरी ख़ुशी में ही छुपी है उनकी ख़ुशी , है ना
देखके मुझको खिलता है उनका चेहरा इतना
नहीं रौशनी चांदनी रात में भी जितना

करलु मैं शैतानिया चाहे जितना
होती उनकी ममता कभी कम ना

मेरा उनसे दोहरा रिश्ता है
एक मित्र का और दूजा मेरी जननी का है

करती है निछावर मुझ पर अपना सारा जीवन
लाकर रख दूँ सारी खुशियां उनके कदमो में , ऐसा मेरा मन

****

श्री इमरान खाटीक

व. लेखापरीक्षक

"मेरे दोस्त"

मन की हर बात तुझसे कह दूं,

आ दोस्त तुझे तेरी हदे और हक दूं।

हद नहीं है कोई तेरी,

जहां जरूरत नहीं वहां जरूरत है तेरी।

रिश्ता हर कोई मतलब से ही निभाता गया,

पर एक दोस्त ही है जो बे मतलब हर रिश्ता निभाता गया।

दोस्त हो तो रोते हुए को हंसाता है, जिंदगी जीने का राज बताता है।

तुझसे कैसे कहूं मैं कि,तू कितना याद आता है।

तेरा बिछड़ना एक पल भी गवारा ना था।

एक दूजे को ढूंढ़ने के लिए लोगों को, हमें एक दूसरे का ही सहारा था।

तेरी दोस्ती में अगर प्यार ना होता, इमरान तेरा यार ना होता।

ये यादें ही है जो याद आ रही है, मेरे दिल को हर पल रुलाये जा रही है।

मेरे हिस्से का छीन कर तेरा टिफिन खाना,

और फटे हुए आवाज में गाना गाना,

बहुत याद आ रहा है मुझे वो मेरा दोस्त पुराना।

बेवजह दूर तक चले जाना और वापस दौड़ते हुए आना,

घर पर मां-बाप की डांट खाना,

बहुत याद आ रहा है मुझे वो मेरा दोस्त पुराना।

तेरा मेरे हर झगड़े में टांग अड़ाना और फिर खुद ही मार खा जाना।

बहुत याद आ रहा है मुझे वो मेरा दोस्त पुराना।

मेरे यार क्या लिखूं तेरे बारे में, मैं कुछ कहाँ लिख पाता हूं।

ये एहसास है दोस्ती का कुछ लफ्जों में कहाँ बयान कर पाता हूं।

आज जो खोली संदुक पुरानी, यादों की दास्तान बाहर निकल आयी।

ढूंढता रहा यहां मैं सच्चा यार मगर,

व्हाट्सएप ,फेसबुक ,इंस्टाग्राम वाली यारी ही नजर आयी।

दोस्ती, यारी में हदे और हक कहां कौन तय कर पाता है।

एक दोस्ती ही है जो जीते जी भी और मरने के बाद भी यारी निभाता है।

****

"मैं महाराष्ट्री हूँ, परंतु हिंदी के विषय में मुझे उतना ही अभिमान है जितना किसी हिंदी भाषी को हो सकता है।" - माधवराव सप्रे।

श्री आकाश सिंह हाडा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

'ट्रेड वॉर' एवं 'डब्ल्यू. टी. ओ.'

द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात् कुछ राष्ट्रों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को सुगम एवं सीमा शूल्क इत्यादि को नियंत्रित करने के लिए, एक समझौते की परिणीति GATT (General Agreement on Trade & Tariff) के रूप में हुई, जो 1995 में कुछ अतिरिक्त पक्षों (सेवा क्षेत्र एवं बौद्धिक सम्पदा) एवं जिम्मेदारियों यथा विवाद निपटारे के साथ WTO (World Trade Organization) की स्थापना हुई। वर्तमान में इसके 164 सदस्य देश है। यह (WTO) एक वैश्विक स्वतंत्र निकाय है, जिसने पूर्व में अपने कार्य एवं विवाद निपटान भी प्रभावी तरीके से किया है। परन्तु आज इसकी प्रासंगिकता एवं अस्तित्व पर ही संशय हो रहा है।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक मंच पर विवाद होना कुछ नया नहीं है। चीन-अमेरिका व्यापार युद्ध, ने समग्र वैश्विक व्यापार तनाव को बहुत बढ़ा दिया है। जहाँ अमेरिका के साथ-साथ अन्य सक्षम राष्ट्र भी संरक्षकवादी व्यवस्था को अपनाने को प्रेरित है। वहीं तीसरी दुनिया एवं अन्य अविकसित राष्ट्र अपने हितों को लेकर असहाय नजर आते है।

अमेरिका द्वारा अपीलीय निकाय के रिक्त पदों की भर्ती में व्यवधान, संरक्षणवाद, एकतरफा व्यापार नीति का क्रियान्वन विकासशील राष्ट्रों के हित संरक्षण उपायों यथा countervailing duty, एंटी डंपिंग मेकेनिज़्म, zero methodology को भेदभावपूर्ण बताना एवं चीन द्वारा स्वयं को, विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था व् प्रथम निर्यातक होने के बाद भी विकासशील बता व्यापार नियमो के स्पेशल ट्रीटमेंट लेने का पुरजोर विरोध किया है। आरोप तो WTO पर भी चीन का पक्ष एवं अमेरिका विरोधी एवं भेदभावपूर्ण रवैया का भी लगाया है।

WTO के Appellate Panel ने पूर्व में अपना काम बखूबी निभाया है। परन्तु वर्तमान में 7 में से कोई सदस्य नहीं होने से प्रक्रिया ठप्प पड़ी है, जबकि विवाद निर्णयन हेतु कम से कम '3' सदस्य आवश्यक है। जिसका सर्वाधिक प्रभाव विकासशील एवं अविकसित राष्ट्र के व्यापारिक हित संरक्षण पर पड़ेगा।

अग्रिम पथ:

- WTO को और अधिक सक्षम, पारदर्शी बना, वैश्वीकरण को बढ़ावा देना होगा।
- संरक्षणवाद के दूरगामी परिणाम किसी भी राष्ट्र के हित में नहीं होते, इसे समझाना होगा।
- प्रभावी रचनात्मक वार्ता द्वारा WTO अपीलीय निकाय का कोरम पूरा करना होगा।
- विकासशील, अविकसित राष्ट्रों के व्यापारिक हितो का ध्यान रख, विकास को केंद्र में रखकर समावेशी वृद्धि के माध्यम से एक स्वस्थ्य, समावेशी, धारीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मंच का निर्माण करना होगा।

****

"भारत के विभिन्न प्रदेशों के बीच हिंदी प्रचार द्वारा एकता स्थापित करने वाले सच्चे भारत बंधु हैं।" - अरविंद।

श्री आनंद कुमार सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

मनोरंजन का स्वरुप

मनुष्य का मन स्वयं अथवा किसी अन्य के कार्यों या भावों के फलस्वरुप सुखद अनुभूति करता है। मन को सुखद अनुभूति कराने वाले क्रिया या भाव को मनोरंजन कहते है। अपने समय को प्रसन्नता के साथ व्यतीत करने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के मनोरंजन के साधनों का प्रयोग किया जाता है। मनोरंजन के विभिन्न साधनों से जीवन दर्शन के अलग-अलग पहलूओं का ज्ञान होता है। मनोरंजन के साधन मनुष्य के विचार धारा को प्रभावित करते हैं तथा विचार धारा के अनुसार मनोरंजन के साधनों का निर्धारण किया जाता है। मनोरंजन तनाव को कम करता है जिससे मन एवं शरीर को नव ऊर्जा मिलती है। मनोरंजन का सीधा संबंध मनुष्य के स्वास्थ्य से है। मनोरंजन की कमी के कारण मनुष्य तनावग्रस्त अनुभव करता है जिसका स्वास्थ्य पर प्रतिकुल प्रभाव पडता है तथा मन नीरस हो जाता है जिसके कारण किसी भी कार्य में रुचि की अनुभूति नहीं होती। वह स्वभाव से चिंड़चिड़ा हो जाता है तथा छोटी-छोटी बातों पर अपना नियंत्रण खो देता है। इससे बचने के लिए मनुष्य को कुछ समय स्वयं के लिए रखना चाहिए जिसमें वह अपना मनोरंजन कर सके जिसके परिणामस्वरुप उसमें उत्साह का संचार हो सके।

प्राचीन काल में मनोरंजन के लिए खान-पान का आयोजन, खेल, विभिन्न प्रकार के नाटक तथा नृत्य, रुचि के अनुसार अध्ययन आदि का प्रयोग किया जाता था। मनोरंजन के लिए मनुष्य के पास पर्याप्त समय था जिसका उपयोग वह स्वयं को आनंदित करने के लिए करता था। साधनों की पर्याप्त बहुलता न होने के बावजूद भी मनुष्य अपने आप को मनोरंजन से जोड़े रखता था। मनोरंजन के लिए मनुष्य के पास सीमित संसाधन थे किंतु वे उनका पूर्ण उपयोग करते थे। मनोरंजन के मुख्य साधन विभिन्न खेलों से संबंधित थे जो मन एवं शरीर दोनों को स्वस्थ्य रखने में अपना योगदान देते थे। विभिन्न समारोहों के दौरान अवसर के अनुसार गीत गायन, नृत्य आदि का आयोजन किया जाता था जिसमें सभी लोग पूर्ण उत्साह के साथ भाग लेते थे एवं स्वयं को आनंदित करते थे।

आज के इस वैज्ञानिक युग में विज्ञान के विकास के फलस्वरुप मनोरंजन के साधनों का भी दायरा बढ गया है। टेलीविजन और इंटरनेट आज के समय में मनोरंजन के प्रमुख साधन हैं। आज घर-घर में टेलीविजन है तथा कार्यक्रमों के प्रसारण के लिए कई चैनल हैं। रुचि के अनुसार कार्यक्रमों का चयन किया जा सकता है। प्रत्येक वर्ग के लिए वर्गीकृत कार्यक्रम उपलब्ध हैं।

इंटरनेट पर भी रुचि के अनुसार मनोरंजन हेतु साधन उपलब्ध है। चलचित्र आज के समय का एक लोकप्रिय मनोरंजन हैं जिसका लोग अपने समयानुसार लाभ उठा सकते हैं। लोग मनोरंजन हेतु सपरिवार पिकनिक पर जाते हैं तथा संगीत समारोह आदि का आयोजन करते हैं। मनोरंजन के आधुनिक साधनों में खेलों का आयोजन अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है तथा इच्छुक व्यक्ति इसका लाभ उठाते हैं। खेलों में भाग लेने के अतिरिक्त आयोजित प्रतिस्पर्धाओं को देखना भी मन को प्रसन्न करने हेतु उपयोगी है। आज ग्रामीण स्तर से लेकर राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक विभिन्न खेलों के प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। खेलों में रुचि कायम रखने के लिए बहुत से नए-नए नियम बनाए गए हैं जिसके फलस्वरुप उनका स्वरुप और अधिक आकर्षक हो गया है तथा देखने वाले प्रसन्नचित्त अनुभव करते हैं। आज कल कवि-सम्मेलनों, काव्य-गोष्ठियों तथा सांस्कृतिक-कार्यक्रमों का आयोजन भी बहुत अधिक लोकप्रिय है। भिन्न-भिन्न रसों के कवियों के काव्य-पाठ को सुनकर मन उस रस से भर जाता है तथा इसका प्रभाव कई दिनों तक जन-जीवन पर रहता है।

आज के समय में वैज्ञानिक विकास के कारण जहाँ मनोरंजन के बहुत से साधन उपलब्ध हैं वहाँ मानव जीवन दिन पर दिन अधिक व्यस्त होता जा रहा है। मानव अपने प्रतिदिन की आवश्यकताओं को लेकर इतना व्यस्त रहता है कि उसके पास स्वयं के मनोरंजन के लिए समय ही नहीं मिल पाता। अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि मनुष्य को मनोरंजन के महत्व को समझना चाहिए तथा स्वयं के मनोरंजन के लिए यथासंभव प्रयास करना चाहिए जिससे उनकी चेतना पुनः जागृत हो सके और वे संपूर्ण उत्साह के साथ आगे कार्य कर सकें।

****

"हिंदी संस्कृत की बेटियों में सबसे अच्छी और शिरोमणि है।" - ग्रियर्सन।

श्री संजय एल. ठाकुर
व. लेखापरीक्षक

“नारी एक शक्ति”

नारी की परिभाषा कभी किसी को समझ नहीं आती। नारी वह है जो असंभव को संभव कर देती है, जो संभव को असंभव कर देती है....

जो न्याय देती है, जो आत्म-सुख का त्याग करती है, जो दुख को गले लगाती है, उसकी दृष्टि अलग है, उसका दृष्टिकोण अलग है...

आज की दुनिया बहुत भयानक है, बड़ी छलांग लगाओ, कभी पीछे नहीं देखना चाहिए, तुम पूरी नारी जाति के बराबर हो..

तुम मां, बेटी, प्रेमिका, पत्नी और ऐसे कई रिश्तों की परिभाषा हो.....

तुम काली हो, तुम दुर्गा हो, तुम सरस्वती हो और तुम लक्ष्मी हो....

अपने लक्ष्य के लिए, आप कमजोर नहीं हैं...

आप धीरज की देवी हैं, विपत्ति और अन्याय को दूर करने का सामर्थ्य रखती हैं।

गर्व से कहिए मैं नारी शक्ति हूँ... मै नारी शक्ति हूँ.....

****

सुश्री पूजा साव
कनिष्ठ अनुवादक

सोशल मीडिया का समाज पर नकारात्मक प्रभाव

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। यह वाक्य हमें हमेशा रटाया गया। सामाजिक होना ही इंसानों एंव जानवरों के बीच का अंतर है। परंतु आज मनुष्य असामाजिक प्राणी हो चुका है। सोशल मीडिया के बढ़ते वर्चस्व ने मनुष्य की सामाजिकता को खत्म कर दिया है।

पिछले एक दशक में सोशल नेटवर्किंग साइट्स की लोकप्रियता काफी बढ़ी है। लोग अपने जिंदगी के हर पहलू पर लोगों की राय, उनकी पसंद और उनकी रूचि जानना चाहते है। वीडियो, संदेश, पिक्चर्स, रिकार्डेड आवाज के जरिए ज्यादा से ज्यादा लोग आपस में जुड़े हैं। परंतु इस जुड़ाव में न तो अपनापन है और न ही असली रूचि, बल्कि प्रतिस्पर्धा और जलन अधिक है।

शुरुआत में नई उम्र के लोग सोशल मीडिया से जुड़े और धीरे-धीरे अधिक उम्र के लोग भी इससे जुड़ते गए। मजाक में ऐसा कहा जाता है कि पूरे परिवार को एक साथ बातचीत के लिए इकट्ठा करना हो तो वाई-फाई थोड़ी देर के लिए बंद कर दो। सोशल मीडिया एक ऐसी दुनिया से लोगो को जोड़ रहा है जो नजर से बहुत दूर है और उन अपनो से भी दूर कर रहा है जो नजर के सामने है।

सोशल मीडिया की अपनी डिमांड है जिसमें प्रोफाइल का अपडेट रहना जरूरी हो गया है। फेसबुक, ट्विटर एवं मायस्पेस जैसे सोशल मीडिया प्लेटफार्म ने जरुरी कामों के बाद बचने वाले समय पर कब्जा कर लिया है। हममें से बहुत से लोग ऐसे है जो किसी कार्य को करने में इसलिए रूचि रखते है कि सोशल मीडिया के जरिए उनका काम अधिक से अधिक लोगो की नजर में आएगा। इस तरह काम के करने की असली वजह सोशल मीडिया पर दिखावा है न कि उसे करने की इच्छा।

सोशल मीडिया ने लोगो के बीच बातचीत को नए तरीके दिए। जहां मिलकर बात करने या फोन पर बात करने का स्थान संदेशों ने ले लिया। इस तरह के तरीकों ने एक दूसरे के विषय में जानकारी को कम और सतही कर दिया। आवश्यक जानकारी जानने का न तो हमारे पास वक्त है और न ही इच्छा। नतीजा,लोगो के बीच दूरियां कई गुना बढ़ गई हैं।

इन दूरियों ने लोगो को अकेलेपन से भर दिया है। जहां पहले लोगो को एक-दूसरे का साथ मिलता था। अब मैसेज से ही काम चलाना पड़ता है। यह सच है कि सोशल मीडिया और अन्य नए साधनों से हम पहले से कहीं अधिक लोगो से जुड़े रहते हैं परंतु इस जुड़ाव में अधुरापन है।

अतः सोशल मीडिया और समाज के बीच सामंजस्य स्थापित करने के लिए यह आवश्यक है कि हम सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव से दूर रहें तथा सोशल मीडिया को अपने समाज एवं निजी जीवन पर हावी न होने दे। हमें आवश्यकतानुसार ही सोशल मीडिया का प्रयोग करना चाहिए।

****

"हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है।" - वी. कृष्णस्वामी अय्यर।

श्री शरद धनगर
लेखापरीक्षक

मंगलग्रह मंदिर

बोरी नदी के तट पर स्थित अमलनेर, जिला जलगाँव (महाराष्ट्र) हर साल सखाराम महाराज के तीर्थयात्रा के कारण लोकप्रिय है। जलगाँव से लगभग 60 किमी की दूरी पर स्थित इस शहर तक पहुँचने के लिए विभिन्न रास्ते और साधन उपलब्ध हैं। जलगांव से दो ट्रेनें हैं, भुसावल-सूरत पैसेंजर और नवजीवन एक्सप्रेस सुबह 9 बजे के आसपास। जलगाँव बस स्टैंड से भी कई बसें हैं। चूंकि यह धुले शहर से 36 किमी दूर है, इसलिए इस मार्ग पर आने वाले यात्रियों के लिए बसों के साथ-साथ निजी वाहनों के भी कई विकल्प हैं। शिक्षा, औद्योगीकरण और स्वतंत्रता आंदोलनों के क्षेत्र में अमलनेर का ऐतिहासिक महत्व है। यह भारत के सबसे पुराने दार्शनिक केंद्रों में से एक है। अमलनेर शहर अभी भी विप्रो के शेयरधारकों के साथ घनी आबादी वाला है। अमलनेर में प्रवेश के लिए एक ऐतिहासिक द्वार है जिसे "DAGDI DARWAJA" कहा जाता है।

देश में दो मंगलग्रह मंदिर

समाज में यह धारणा है कि जन्मपत्री में मंगल दोष के कारण विवाह में देरी होती है। वैज्ञानिकों ने समस्या को ठीक करने के लिए कुछ उपाय भी सुझाए हैं। इस भक्ति के कारण, भक्तों द्वारा मंगल के मंदिर की खोज की जाती है। विशेषज्ञों के अनुसार, भारत में नवग्रहों के कई मंदिर हैं, लेकिन देश में मंगल के कुछ अलग मंदिर हैं। इनमें से एक मंदिर अमलनेर में है। चोपडा गांव के रास्ते में एक मंगलग्रह मंदिर है और अमलनेर बस स्टैंड से लगभग दो किलोमीटर दूर है।

मंदिर की पृष्ठभूमि

इस बात की कोई ठोस जानकारी उपलब्ध नहीं है कि अमलनेर में इस मंगल मंदिर में किसकी और कब मूर्ति स्थापित की गई थी। हालांकि, कहा जाता है कि मंदिर को 1993 में दगडूशेठ सराफ द्वारा पुनर्निर्मित किया गया था। सराफ ने 1940 तक मंदिर में सभी पूजा और अनुष्ठानों का आयोजन करके मंदिर परिसर का विकास किया। उनकी मृत्यु के बाद, मंदिर को फिर से उपेक्षित कर दिया गया। इसलिए कुछ दिनों में ही यह खंडहर हो गया। उसके बाद, जगदीश नाथजी महाराज, जिन्होंने एक पैर पर खड़े होकर लगभग 12 वर्षों तक तपस्या की, ने इस मंदिर को गौरव दिलाया। हालाँकि, कुछ समय बाद, नाथजी महाराज के बारे में कहा जाता है कि वे अचानक मंदिर से चले गए। उसके बाद लंबे समय तक मंदिर की उपेक्षा की गई। आखिरकार, 1999 और 2000 के बीच, मंदिर बोर्ड ऑफ ट्रस्टी का गठन किया गया और मंदिर का जीर्णोद्धार किया गया। हालांकि, उसके बाद, मंदिर एक वास्तविक अर्थ में विकसित हुआ।

सफलता, लाभ के लिए अभिषेक

मंदिर में प्रवेश करने के बाद, मन की संतुष्टि तुरंत महसूस होती है। मंदिर परिसर में कुछ देर रुकने के बाद मिलने वाली खुशी की अनुभूति बिना अनुभव के समझ में नहीं आती। प्रकृति की सर्वोच्च शक्ति और प्रकृति की सुंदरता के लिए अभिजात इच्छा के लिए मानव मन के सम्मान को संयोजित करने के लिए यह धार्मिक स्थान भी परिवार के लिए एक बढ़िया विकल्प है। चूंकि मंगल भूमिपुत्र है, कई व्यापारी मंदिर में अभिषेक करने के लिए आते हैं। वे अभिषेक के बाद ही खरीदते और बेचते हैं।

पर्यावरणीय गतिविधियाँ जैसे 'पानी रोकना, पानी बचाना', 'पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ' को यहाँ लागू किया गया था। परिणामस्वरूप, क्षेत्र में बड़ी संख्या में पेड़ लगाए गए और यह एक जंगल बन गया। भंडारण बांधों के माध्यम से क्षेत्र में पानी अवरुद्ध है। उसी पानी का उपयोग क्षेत्र में हरियाली बनाने के लिए किया गया है।

तुलसी का बगीचा

मंदिर के बगल में बना तुलसी गार्डन अपनी शानदार उपस्थिति के कारण युवा और बुजुर्गों के लिए आकर्षण का केंद्र है। विभिन्न रंगों के फूल, केले के पेड़ों की सजावट, पूरे क्षेत्र में लगाए गए विभिन्न पेड़ इस उद्यान को वास्तव में सजाते हैं। बच्चों के साथ खेलने के लिए विभिन्न खिलौने हैं।

पिकनिक स्पॉट

मंदिर ने अपने बांधों, फव्वारे, शानदार प्रकाश व्यवस्था, सुंदर हरियाली और भक्तों के लिए सभी प्रकार की सेवाओं के कारण एक पिकनिक स्थल के साथ-साथ एक पर्यटन स्थल के रूप में व्यापक लोकप्रियता हासिल की है। सारे स्कूल, कॉलेज, संस्थान, संगठन यात्रा के लिए आते हैं। मंदिर के भव्य द्वार के सामने एक शेड बनाया गया है। इसके बगल में नवकार कुटिया है और उसके नीचे भगवान शिव की मूर्ति तथा झरना है।

उत्कृष्ट आवास

मंदिर परिसर में बाहरी यात्रियों के लिए आवास भी उपलब्ध है। इसमें महंगे होटलों की तरह ही सुसज्जित एसी कमरे भी हैं। दो बड़े हॉलों के माध्यम से बहुत कम दरों पर आवास प्रदान किया जाता है।

हर मंगलवार को महाप्रसाद

प्रत्येक मंगलवार को, मंदिर को तीर्थ के रूप में शिरडी, शेगाँव के तरह रूप प्राप्त होता है। मंदिर प्रशासन द्वारा केवल पंद्रह रुपये में महाप्रसाद दिया जाता है। इसे प्याज और लहसुन के बिना रसदार दाल, चावल, पूड़ी और गुड़ के साथ परोसा जाता है।

इस प्रकार से मंगल ग्रह मंदिर अपने सौहार्दपूर्ण वातावरण के कारण स्थानीय लोगों के साथ बाहरी लोगों में भी बहुत अधिक लोकप्रिय है। यहाँ भक्तजन मंदिर में पूजा-पाठ करने के साथ-साथ मन को शांति प्रदान करने वाले प्राकृतिक सौंदर्य का भी लाभ उठाते हैं।

****

श्री हरीश कुमार

आंकडा प्रविष्टि प्रचालक

भारतीय संस्कृति

पूरे विश्व में भारत अपनी संस्कृति और परंपरा के लिये प्रसिद्ध देश है। ये विभिन्न संस्कृति और परंपरा की भूमि है। भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यता का देश है। भारतीय संस्कृति के महत्वपूर्ण तत्व अच्छे शिष्टाचार, तहज़ीब, सभ्य संवाद, धार्मिक संस्कार, मान्यताएँ और मूल्य आदि हैं। अब जबकि प्रत्येक की जीवन शैली आधुनिक हो रही है, भारतीय लोग आज भी अपनी परंपरा और मूल्यों को बनाए हुए हैं। विभिन्न संस्कृति और परंपरा के लोगों के बीच की घनिष्ठता ने एक अनोखा देश, 'भारत' बनाया है। अपनी खुद की संस्कृति और परंपरा का अनुसरण करने के द्वारा भारत में लोग शांतिपूर्ण तरीके से रहते हैं।

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृति है जो लगभग 5,000 हजार वर्ष पुरानी है। विश्व की पहली और महान संस्कृति के रुप में भारतीय संस्कृति को माना जाता है। "विविधता में एकता" का कथन यहाँ पर आम है अर्थात् भारत एक विविधतापूर्ण देश है जहाँ विभिन्न धर्मों के लोग अपनी संस्कृति और परंपरा के साथ शांतिपूर्ण तरीके से एक साथ रहते हैं। विभिन्न धर्मों के लोगों की अपनी भाषा, खाने की आदत, रीति-रिवाज़ आदि अलग हैं फिर भी वो एकता के साथ रहते हैं। पूरे विश्व भर में भारतीय संस्कृति बहुत प्रसिद्ध है। विश्व के बहुत रोचक और प्राचीन संस्कृति के रुप में इसे देखा जाता है। अलग-अलग धर्मों, परंपराओं, भोजन, वस्त्र आदि से संबंधित लोग यहाँ रहते हैं। विभिन्न संस्कृति और परंपरा के रह रहे लोग यहाँ सामाजिक रुप से स्वतंत्र हैं इसी वजह से धर्मों की विविधता में एकता के मजबूत संबंधों का यहाँ अस्तित्व है।

अलग परिवारों, जातियों, उप-जातियों और धार्मिक समुदाय में जन्म लेने वाले लोग एकसाथ शांतिपूर्वक एक समूह में रहते हैं। यहाँ लोगों का सामाजिक जुड़ाव लंबे समय तक रहता है। अपनी तारतम्यता, और सम्मान की भावना, इज़्ज़त और एक-दूसरे के अधिकार के बारे में अच्छी भावना रखते हैं। अपनी संस्कृति के लिये भारतीय लोग अत्यधिक समर्पित रहते हैं और सामाजिक संबंधों को बनाए रखने के लिये अच्छे सभ्याचार को जानते हैं। भारत में विभिन्न धर्मों के लोगों की अपनी संस्कृति और परंपरा होती है। उनके अपने त्यौहार और मेले होते हैं जिसे वो अपने तरीके से मनाते हैं। लोग विभिन्न भोजन संस्कृति जैसे पोहा, बूंदा, ब्रेड ऑमलेट, केले का चिप्स, आलू का पापड़, मुरमुरे, उपमा, डोसा, इडली, चाईनीज़ आदि का अनुकरण करते हैं। दूसरे धर्मों के लोगों की कुछ अलग भोजन संस्कृति होती है जैसे सेवईयाँ, बिरयानी, तंदुरी, मठ्ठी आदि।

संस्कृतियों से समृद्ध एक देश भारत है जहाँ अलग-अलग संस्कृतियों के लोग रहते हैं। हम अपनी भारतीय संस्कृति का बहुत सम्मान और आदर करते हैं। संस्कृति सबकुछ है जैसे दूसरों के साथ व्यवहार करने का तरीका, विचार, प्रथा जिसका हम अनुसरण करते हैं, कला, हस्तशिल्प, धर्म, खाने की आदत, त्यौहार, मेले, संगीत और नृत्य आदि सभी संस्कृति का हिस्सा है। भारत अधिक जनसंख्या के साथ एक बड़ा देश है जहाँ विभिन्न धर्मों के लोग अपनी अनोखी संस्कृति के साथ एकसाथ रहते हैं। देश के कुछ मुख्य धर्म हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन और यहूदी हैं। भारत एक ऐसा देश है जहाँ देश के अलग-अलग हिस्सों में भिन्न - भिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं। आमतौर पर यहाँ के लोग वेशभूषा, सामाजिक मान्यताओं, प्रथा और खाने की आदतों में भिन्न होते हैं।अपने धर्म के अनुसार लोग मान्यताओं, रीति-रिवाजों और परंपराओं को मानते हैँ। हम अपने त्यौहारों को अपने रस्मों के हिसाब से मनाते हैं, व्रत रखते हैं, पवित्र गंगा नदी में स्नान करते हैं, भगवान की पूजा और प्रार्थना करते हैं, रस्मों से संबंधित गीत गाते हैं, नृत्य करते हैं, लज़ीज़ पकवान खाते हैं, रंग-बिरंगे कपड़े पहनते हैं और दूसरी ढ़ेर सारी क्रियाकलाप करते हैं। विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों सहित हम कुछ राष्ट्रीय उत्सवों को एकसाथ मनाते हैं जैसे गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, गाँधी जयंती आदि। बिना एक-दूसरे के जीवन में हस्तक्षेप किए बेहद खुशी और उत्साह के साथ देश के विभिन्न भागों में विभिन्न धर्मों के लोग अपने त्यौहारों को मनाते हैं।

समृद्ध संस्कृति और विरासत की भूमि है भारत जहाँ लोगों में इंसानियत, उदारता, एकता, धर्मनिर्पेक्षता, मजबूत सामाजिक संबंध और दूसरे अच्छे गुण हैं। दूसरे धर्मों के लोगों द्वारा ढ़ेर सारी क्रोधी क्रियाओं के बावजूद भी भारतीय हमेशा अपने दयालु और सौम्य व्यवहार के लिये जाने जाते हैं। अपने सिद्धांतों और विचारों में बिना किसी बदलाव के अपनी सेवा-भाव और शांत स्वाभाव के लिये भारतीयों की हमेशा तारीफ होती है। भारत महान किंवदंतियों की भूमि है जहाँ महान लोगों ने जन्म लिया और ढ़ेर सारे सामाजिक कार्य किये।वो आज भी हमारे लिये प्रेरणादायी व्यक्तित्व हैं। भारत महात्मा गाँधी की भूमि है जहाँ उन्होंने लोगों में अहिंसा की संस्कृति पल्लवित की है। उन्होंने हमेशा हम लोगों से कहा कि अगर तुम वाकई बदलाव लाना चाहते हो तो दूसरों से लड़ाई करने के बजाय उनसे विनम्रता से बात करो। उन्होंने कहा कि इस धरती पर सभी लोग प्यार, आदर, सम्मान और परवाह के भूखे हैं; अगर आप उनको सबकुछ दोगे तो निश्चित ही वो आपका अनुसरण करेंगे।

गाँधी जी अहिंसा में विश्वास करते थे और अंग्रेजी शासन से भारत के लिये आजादी पाने में एक दिन वो सफल हुए। उन्होंने भारतीयों से कहा कि अपनी एकता और विनम्रता की शक्ति दिखाओ, तब बदलाव देखो। भारत पुरुष और स्त्री, जाति और धर्म आदि का देश नहीं है बल्कि ये एकता का देश है जहाँ सभी जाति और संप्रदाय के लोग एक साथ रहते हैं।भारत में लोग आधुनिक है और समय के साथ बदलती आधुनिकता का अनुसरण करते हैं फिर भी वो अपनी सांस्कृतिक मूल्यों और परंपरा से जुड़े हुए हैं। भारत एक आध्यात्मिक देश है जहाँ लोग आध्यात्म में भरोसा करते हैं। यहाँ के लोग योग, ध्यान और दूसरे आध्यात्मिक क्रियाओं में विश्वास रखते हैं।

कई सारे युग आये और गये लेकिन कोई भी इतना प्रभावशाली नहीं हुआ कि वो हमारी वास्तविक संस्कृति को बदल सके। नाभिरज्जु के द्वारा पुरानी पीढ़ी की संस्कृति नयी पीढ़ी से आज भी जुड़ी हुयी है। हमारी राष्ट्रीय संस्कृति हमेशा हमें अच्छा व्यवहार करना, बड़ों की इज़्ज़त करना, मजबूर लोगों की मदद करना और गरीब और जरुरत मंद लोगों की मदद करना सिखाती है।

ये हमारी धार्मिक संस्कृति है कि हम व्रत रखे, पूजा करें, गंगा जल अर्पण करें, सूर्य नमस्कार करें, परिवार के बड़े सदस्यों का पैर छुएँ, रोज ध्यान और योग करें तथा भूखे और अक्षम लोगों को अन्न-जल दें। हमारे राष्ट्र की ये महान संस्कृति है कि हम बहुत खुशी के साथ अपने घर आये मेहमानों की सेवा करते है क्योंकि मेहमान भगवान का रुप होता है इसी वजह से भारत में “अतिथि देवो भव:” का कथन बेहद प्रसिद्ध है। हमारी संस्कृति की मूल जड़ इंसानियत और आध्यात्मिक कार्य है।

****

गोकुल

नन्हें कन्हैया छोटी दंतिया दिखाए, पग घुंघरू बजाए प्यारी मुरली सुनाये।

मोर पंख मस्तक पर सुन्दर सजाये, दूध दही सम्भालो मटकी फोड़न को आये।

कदंब के झूलों में वृन्दावन की गलियों में, कन्हैया को ढूँढ़ते माँ यशोदा खूब बौराए।

कन्हैया को ढूँढ़ते माँ यशोदा खूब बौराए।

कन्हैया छिप छिप के आये, कन्हैया मंद मंद मुस्काये।

उड़त गुलाल, बजत करताल प्रगट भये देखो नंदलाल

चंचल अँखियाँ, सुंदर मुखड़ा नन्हीं उँगली नोचत गाल ।।

सुनत ध्वनि भई धन्य मैं सखी हर्षित हैं सब बाल ग्वाल

कोई लावे माखन मिश्री कोई हलुवा मेवे डाल ।।

मैं अज्ञानी कछु न लै गई पूजन अपने बाल गोपाल

हे! कान्हा मोहे अपना लीजो सखी बना मोहे करो निहाल, करो कृपा अब दीनदयाल ।।

मॉडल तथा रचना- विदिप्ता फुलपाड़िया

पुत्री - श्रीमती स्वप्ना फुलपाड़िया, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

राजभाषा संबंधी जानकारी

संविधान का अनुच्छेद 343: संघ की राजभाषा–

संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।

संविधान का अनुच्छेद 351. हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश–

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्थानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

राजभाषा अधिनियम 1963 (यथा संशोधित 1967) की धारा 3(3) के अनुसार हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी किए जाने वाले दस्तावेज --

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा (3)3 के अंतर्गत अनिवार्य रुप से द्विभाषी जारी किए जाने वाले कागज़ात

1- सामान्य आदेश (General Orders)
2 -संकल्प(Resolution)
3- परिपत्र(Circulars)
4-नियम(Rules)
5- प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन (Administrative or other reports)
6- प्रेस विज्ञप्तियां (Press Release/Communiques)
7- संविदाएं(Contracts)
8- करार(Agreements)
9- अनुज्ञप्तियां(Licenses)
10- निविदा प्रारुप (Tender Forms)
11- अनुज्ञा पत्र (Permits)
12- निविदा सूचनाएं (Tender Notices)
13- अधिसूचनाएं(Notifications)
14- संसद के समक्ष् रखे जाने वाले प्रतिवेदन तथा कागज़ पत्र (Reports and documents to be laid before the Parliament)

राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976

(यथा संशोधित, 1987, 2007 तथा 2011)

इनका विस्तार, तमिलनाडु राज्य के सिवाय सम्पूर्ण भारत पर है।

'क्षेत्र क' से बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड़, उत्तराखंड राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

'क्षेत्र ख' से गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत हैं;

'क्षेत्र ग' से उपर्युक्त राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

नियम-5 : हिन्दी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर--

हिन्दी में पत्रादि के उत्तर केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से हिन्दी में दिए जाएंगे ।

नियम-6 हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग-

अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसी दस्तावेजें हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार की जाती हैं, निष्पादित की जाती हैं और जारी की जाती हैं।

नियम 9 : हिन्दी में प्रवीणता-

यदि किसी कर्मचारी ने-

मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली

है या स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में

हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या

यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है ।

नियम 10 : हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान-

यदि किसी कर्मचारी ने-

मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या केन्द्रीय सरकार की हिन्दी परीक्षा योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के सम्बन्ध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है या केन्द्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या

यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है;

तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

यदि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिन्दी का ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

नियम 11 : मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि-

=> केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।

=> केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्ररूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे।

=> केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी;

परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार ऐसा करना आवश्यक समझती है तो वह, साधारण या विशेष आदेश द्वारा, केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्हीं उपबन्धों से छूट दे सकती है।

नियम 12 : अनुपालन का उत्तरदायित्व-

केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह--

यह सुनिश्चित करे कि अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है और इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करे ।

****

सरकार के कार्मिकों के लिए राजभाषा हिंदी से संबंधित प्रोत्साहन योजना

सरकारी कामकाज (टिप्पण/आलेखन) मूल रूप से हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना

सरकारी काम मूल रूप से हिंदी में करने के लिए पुरस्कार राशि निम्न प्रकार है-

केंद्र सरकार के प्रत्येक मंत्रालय/विभाग/संम्बंध कार्यालय के लिए स्वतंत्र रूप से:

पहला पुरस्कार (2 पुरस्कार) : प्रत्येक 5000/-रुपये

दूसरा पुरस्कार (3 पुरस्कार) : प्रत्येक 3000/-रुपये

तीसरा पुरस्कार (5 पुरस्कार) : प्रत्येक 2000/-रुपये

(का.ज्ञा.सं. 12013/01/2011-रा.भा.(नीति) दिनांक 14 सितंबर, 2016)

योजना के लिए मुख्य मार्गदर्शी निम्नानुसार हैं:-

केन्द्रीय सरकार के सभी मंत्रालय/विभाग/संबंध और अधीनस्थ कार्यालय अपने अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए स्वतंत्र रूप से इस योजना को लागू कर सकते हैं|

सभी श्रेणियों के वे अधिकारी/कर्मचारी इस योजना में भाग ले सकते हैं जो सरकारी काम पूर्णतः या कुछ हद तक मूल रूप से हिंदी में करते हैं|

केवल वही अधिकारी/कर्मचारी पुरस्कार के पात्र होंगे जो 'क' तथा 'ख' क्षेत्र में वर्ष में कम से कम 20 हजार शब्द तथा 'ग' क्षेत्र में वर्ष में कम से कम 10 हजार शब्द हिंदी में लिखें| इसमें मूल टिप्पण व प्रारूप के आलावा हिंदी में किये गए अन्य कार्य जिनका सत्यापन किया जा सके, जैसे रजिस्टर में इन्दराज, सूची तैयार करना, लेखा का काम आदि भी शामिल किये जायेगें|

आशुलिपि/टाइपिस्ट, जो सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने संबंधी किसी अन्य योजना के अंतर्गत आते हैं इस योजना में भाग लेने के पात्र नहीं होंगे|

हिंदी अधिकारी और हिंदी अनुवादक सामान्यतः अपना काम हिंदी में करते हैं, वे इस योजना में भाग लेने के पात्र नहीं होंगे|

(क) मूल्याकंन करने के लिए कुल 100 अंक रखे जायेंगे| इनमें से 70 अंक हिंदी में किये गए काम की मात्रा के लिए रखे जायेंगे और 30 प्रतिशत अंक विचारों की स्पष्टता के लिए होंगे| (ख) जिन प्रतियोगियों की मातृभाषा तमिल, तेलगू, कन्नड़, मलयालम, बंगाली, उड़िया या असमिया हो उन्हें 20 प्रतिशत अंको का लाभ दिया जायेगा| ऐसे कर्मचारी को दिए जाने वाले वास्तविक अंकों के लाभ का निर्धारण मूल्यांकन समिति द्वारा किया जायेगा| ऐसा करते समय समिति उन अधिकारियों/कर्मचारियों के काम के स्तर को भी ध्यान में रखेगी जो अन्यथा उससे क्रम में ऊपर हैं|

सेवानिवृत्ति

श्री एस. बी. डेकाटे, पर्यवेक्षक अपना सेवा काल पूर्ण करने के पश्चात दिनांक 30/06/2021 को सेवानिवृत्त हुए।

कार्यालय में आयोजित विभिन्न गतिविधियाँ

आपके पत्र

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का कार्यालय त्रिपुरा,अगरतला

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 5वें अंक की ई-संस्करण की प्रति प्राप्ति हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में दी गई रचनाओं की भाषा सहज एंव सरल है जो पाठकगण की रुचि को बांधने में सफल रहती है। छायाचित्रों का संकलन उत्तम है। 'भाषा और समाज' के माध्यम से लोगो में हिंदी भाषा के प्रति रुचि जगाना काफी सराहनीय है। 'राजभाषा सम्बन्धी जानकारी' आदि रचनांए विशेष रूप से ज्ञानवर्धक एंव प्रशंसनीय है।

आशा करता हूं कि आपकी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' नई चेतना एंव नये विचार से समाज को उत्कृष्ट बनाने में अपना योगदान देती रहेगी। 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' परिवार को पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एंव कुशल संपादन के लिए 'गोमती' परिवार की ओर से ढेर सारी शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी(प्रशा.)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),झारखण्ड राँची

आपके कार्यालय से प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के पाँचवें अंक की ई-प्रति की प्राप्ति हुई है।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एंव पत्रिका में निहित सभी रचनाएं अत्यंत ही उच्चत्तर श्रेणी की हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन एंव प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी(हिंदी प्रकोष्ठ)

प्रधान महालेखाकार (ले.व.ह.) का कार्यालय,कर्नाटक, बेंगलूरु

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी त्रैमासिक ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के पाँचवें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। श्री देवेन्द्र कुमार मीना की कविता 'बेटियाँ खास होती है' ह्रदयस्पर्शी है। श्री आनंद कुमार सिंह,कनिष्ठ अनुवादक का लेख 'भाषा और समाज' विचारणीय है। श्री इमरान खाटीक का लेख महान कवि 'रहीम जी का जीवन परिचय व साहित्य रचनाएँ' प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाहित अन्य सभी लेख भी सराहनीय है।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एंव रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी।

वरिष्ठ लेखाधिकारी/मा.स.वि

प्रधान महालेखाकार (ले0 एंव ह0) का कार्यालय,बिहार,पटना

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालय के ई-मेल दिनांक 17.06.2021 के द्वारा हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 5वें अंक की ई प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई।

अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा सुंदर एवं लुभावना है। उसका बाहरी रंग रूप ही नहीं,आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। सुश्री वी0 सरला की रचना 'जय जवान जय किसान' श्री देवेंद्र कुमार मीणा की रचना 'बेटियाँ खास होती है' एंव श्री आनंद कुमार सिंह का लेख 'भाषा और समाज' काफी रोचक,सराहनीय एंव ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र है। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी(हिन्दी कक्ष)

कार्यालय,महालेखाकार (लेखापरीक्षा),बिहार

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के पांचवें अंक की प्रति प्राप्त हुई,एतदर्थ धन्यवाद और बधाई। पत्रिका के इस अंक की विषय सामग्री,आवरण-सज्जा और मुद्रण अत्यंत उत्कृष्ट और स्तरीय हौ। सम्पादक मण्डल ने इस अंक में पठनीय एंव सारगर्भित रचनाओं को संकलित किया है।

हिन्दी भाषी क्षेत्र में राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु लेखापरीक्षा ज्ञानोदय का प्रकाशन अत्यंत प्रशंसनीय है। पत्रिका भविष्य में भी राजभाषा की प्रगति के अभियान को और सशक्त बनाये इसी कामना के साथ समस्त पत्रिका परिवार को पुनः बधाई और शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),उत्तराखण्ड

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित तिमाही हिंदी ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के पंचम अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एंव रोचक है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक एंव मनमोहक है। कविताएं एंव लेख भी भावपूर्ण,सार्थक तथा मन को छू लेने वाली है।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एंव रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंको के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.व.ह.) हिमाचल प्रदेश,शिमला

आपके कार्यालय की ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के पाँचवें अंक की प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्तकृष्ट एंव ज्ञानवर्धक है। हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है जिसके लिए आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी(हिन्दी कक्ष)

प्रधान महालेखाकार (लेखा एंव हक),पश्चिम बंगाल

आपके कार्यालय की "पत्रिका लेखापरीक्षा" ज्ञानोदय के 5वें अंक की प्रति प्राप्त हुई,एतदर्थ आभार। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ एंव पृष्ठों की साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक एंव मनमोहक है। यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के विकास की दिशा में किया गया एक सफल प्रयास है। पत्रिका की प्रत्येक रचना रोचक,ज्ञानवर्धक एंव सामाजिक चेतना से परिपूर्ण है। वैसे तो सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है पर विशेष रूप से श्री आनंद कुमार सिंह की "भाषा और समाज" तथा श्री इमरान खाटीक की "महान कवि रहीम जी का जीवन परिचय एंव साहित्य रचनाएं" बेहद प्रशंसनीय एंव ज्ञानवर्धक है।

कविताओं में सुश्री वी.सरला की "जय जवान जय किसान" एंव श्री देवेंद्र कुमार मीना की "बेटियाँ खास होती है" काफी अर्थपूर्ण एंव रोचक है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एंव संपादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएं।

हिन्दी अधिकारी/प्रशा,हिन्दी सेल

महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर

आपके कार्यालय की हिंदी त्रैमासिक ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के पाँचवें अंक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एंव कविताएँ रोचक एंव ज्ञानवर्धक है। विशेषकर सुश्री वी. सरला,वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी की कविता 'जय जवान जय किसान',श्री आकाश सिंह हाडा,सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी का लेख 'रासायनिक आपदा' तथा श्री आंनद कुमार सिंह, कनिष्ठ अनुवादक का लेख 'भाषा और समाज' उल्लेखनीय एंव सराहनीय है। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

पत्रिका के रचनाकारों एंव संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एंव पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (लेखापरीक्षा)-II महाराष्ट्र-मुंबई शाखा कार्यालय

आपके कार्यालय से हिन्दी ई-पत्रिका "लेखा परीक्षा ज्ञानोदय" के पांचवें अंक की प्रति प्राप्त हुई है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ जैसे महान कवि रहीम जी का जीवन परिचय एंव साहित्य रचनाएँ,कोरोना वायरस तथा श्री पांडुरंग सदाशिव साने (साने गुरुजी) लेख एंव बेटियाँ खास होती है कविताएं अत्यंत प्रशंसनीय है। इसके अतिरिक्त राजभाषा संबंधी तथा सरकार के कार्मिकों के लिए राजभाषा हिन्दी से संबंधित प्रोत्साहन योजनाओं की जानकारियां अत्यंत उपयोगी है। हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए व पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं सहित।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय, भुवनेश्वर

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" का पाँचवा अंक प्राप्त हुआ। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रुपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट,ज्ञानवर्धक और रोचक है, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ हमारे विचार से प्रशंसनीय हैः-

क्रम	रचनाकार	रचनाएं
1	सुश्री वी. सरला, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	जय जवान जय किसान
2	श्री आनंद कुमार सिंह, कनिष्ठ अनुवादक	भाषा और समाज

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (गृह,शिक्षा एंव कौशल विकास), नई दिल्ली

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में हिंदी त्रैमासिक ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के पांचवा अंक की ई-पत्रिका ई-मेल द्वारा इस कार्यालय को प्राप्त हुई है, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण एंव साज-सज्जा मुद्रण अति उत्तम है। श्री देवेंद्र कुमार मीना,वरिष्ठ लेखापरीक्षक की कविता "बेटियाँ खास होती हैं" एंव सुश्री वी.सरला,वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी की कविता "जय जवान जय किसान" अत्यंत ही प्रशंसनीय है।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं ज्ञानवर्धक,लाभप्रद तथा पूर्ण रूप से पठनीय है। श्रेष्ठ सम्पादन के लिए पत्रिका परिवार को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभ कामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

प्रधान महालेखाकार (ले.व ह.) हरियाणा का कार्यालय, चंडीगढ़

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 05वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उच्चस्तरीय,ज्ञानवर्धक एंव प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाविष्ट श्री आनंद कुमार सिंह का लेख 'भाषा और समाज', श्री हरीश कुमार का लेख 'कोरोना वायरस', एंव इमरान खटीक का लेख 'महान कवि रहीम जी का जीवन परिचय एंव साहित्य रचनाएं' बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख है।

इसके अतिरिक्त सुश्री वी.सरला की कविता 'जय जवान जय किसान' एंव श्री देवेंन्द्र कुमार मीना की कविता 'बेटियां खास होती है' पठनीय है।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र है। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिंदी अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) ओड़िसा, भुवनेश्वर

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका "ज्ञानोदय" के पांचवें अंक की एक ई-प्रति प्राप्त हुई,एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की अत्यंत रोचक,ज्ञानवर्धक,मनोरंजक एंव सराहनीय है। जिनमें श्री देवेंद्र कुमार मीना जी की रचना "बेटियाँ खास होती है" एंव श्री आनंद कुमार सिंह जी की रचना "भाषा और समाज" आदि विशेष रुप से प्रशंसनीय है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एंव संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिंदी प्रभारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा, चंडीगढ़

ई-मेल द्वारा दिनांक 17.06.2021 को हिंदी ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के पांचवें अंक की प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं सराहनीय है। 'जय जवान जय किसान' बेटियां खास होती है' भाषा और समाज' 'साने गुरूजी' एंव 'कोरोना वायरस' आदि रचनाएं विशेष रूप से रूचिकर एंव प्रेरणादायक है। संपादक मंडल कुशल संपादन के लिए बधाई का पात्र है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्ष)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक.) राजस्थान, जयपुर

आपके कार्यालय की हिंदी त्रैमासिक ई पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 5वें ई-अंक की प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में संग्रहित सभी रचनाएं प्रभावशाली, रोचक एंव उच्चकोटि की है। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के इस अंक में सम्मिलित की गई सुश्री वी.सरला की कविता "जय जवान जय किसान" श्री आकाश सिंह हाडा का लेख "रासायनिक आपदा" श्री आनंद कुमार सिंह का लेख "भाषा और समाज" एंव श्री हरीश कुमार का लेख "कोरोना वायरस" विशेष रूप से सराहनीय है।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एंव उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

कल्याण अधिकारी (राजभाषा कक्ष)

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र. भोपाल

आपके कार्यालय की पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के पांचवें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद, पत्रिका का सम्पादन सराहनीय है। पत्रिका में सभी लेख एंव रचनाएं प्रशंसनीय है। विशेष तौर पर 'जय जवान जय किसान 'रासायनिक आपदा', 'भाषा और समाज', 'महान कवि रहीम जी का जीवन परिचय एंव साहित्य रचनाएं', रचनाएं प्रेरणादायक और सराहनीय है।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है।

पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु इस नर्मदा परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

वरि.लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) राजस्थान,जयपुर

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के पाँचवें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई,सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं पठनीय एंव आकर्षक है। रचनाओं में दिखाए गए छायाचित्र सार्थक एंव विषय के अनुरूप है। पत्रिका ने सृजनात्मक क्षमता में वृद्धि के साथ ही राजभाषा के प्रचार-प्रसार को भी गति दी है। पत्रिका के कुशल संपादन के लिए संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई एंव पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए ढेरों शुभकामनाएं। आशा है कि आपकी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' इसी तरह प्रगति की ओर अग्रसर रहेगी।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

राजभाषा अनुभाग

आप सभी से प्राप्त प्रशंसा एवं शुभकामनाओं के लिए बहुत बहुत आभार। आपके पत्रों के माध्यम से पत्रिका के संबंध में आपकी प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। आपके प्रतिक्रियाओं से हमारे आगामी अंको हेतु प्रोत्साहन मिलता है तथा हम पत्रिका के प्रकाशन द्वारा राजभाषा के विकास में अपना योगदान देने हेतु प्रेरित होते हैं। हमारे छोटे से प्रयास की सराहना के लिए आप सभी का सादर धन्यवाद तथा हम भविष्य में भी आपके सहयोग की आशा करते हैं। हमे आशा है कि हम सभी एक साथ मिलकर राजभाषा हिंदी के विकास में अपना योगदान देते रहेंगे।

अतः आप सभी पाठकों से अनुरोध है कि पत्रिका को पढ़ने के पश्चात अपने विचार हमें प्रेषित करें।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

राजभाषा हिंदी के संबंध में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित लक्ष्य

क्र.सं.	कार्य विवरण	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्यसंघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति 100%	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4.ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्यसंघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 90%	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्यसंघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पेनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रानिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद ।	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%

13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25%(न्यूनतम)	25%(न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें		
	(क) हिंदी सलाहकार समिति		वर्ष में 2 बैठकें
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	

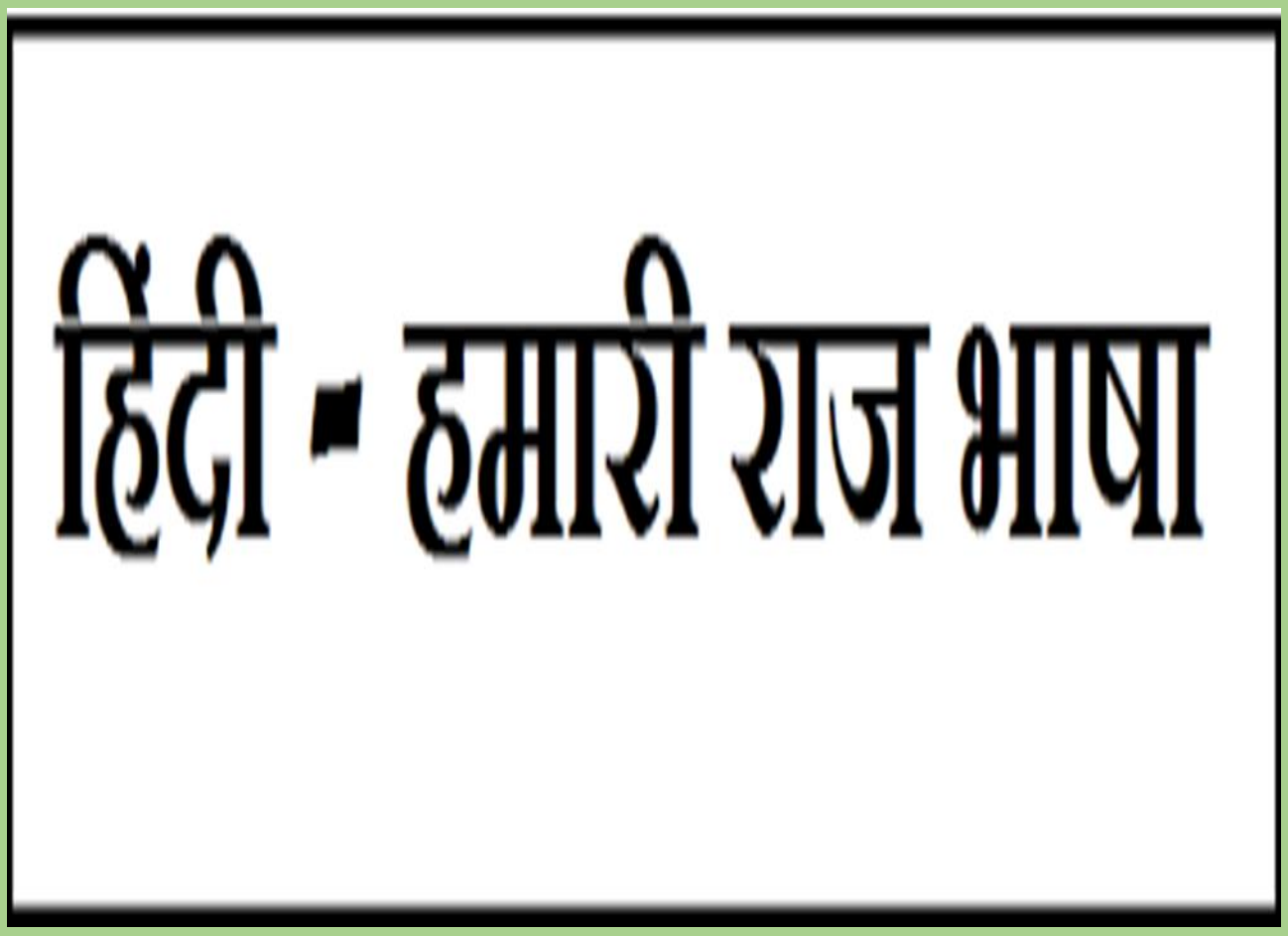
हिंदी - हमारी राज भाषा

हिंदी भारतीय संस्कृति
की आत्मा है